मेरा घर कहाँ है?

सोनी पाण्डेय

ईमेल- pandeysoni.azh@gmail.com

सुनों!ऽऽऽऽ

सुनों!ऽऽऽऽ

सुनों! ऽऽऽऽ

शांति देश के परम प्रतापी, दयावान...धर्मरक्षक...प्रजापालक...न्यायप्रिय महाराजाधिराज धर्मदेव की आज्ञा है कि प्रजा तब तक भजन करती रहे जब तक आकाश से अमृत की वर्षा न हो।

जब तक गायें दूध को सोना न बना दें।
जब तक मरता हुआ भूखा आदमी मुस्कुराने न लगे।
गाय-भैसों के गोबर से औषधी बनने न लगे..

अभी राजा के सिपाही मुनादी कर ही रहे थे कि लंबू लवंडा ब्लाउज में से दस की नोट पान चबाते...कमर मटकाते... नागिन की तरह चोटी लहराते मंच पर अवतरित हुआ...

मेहरबान!
कदरदान!
दिलजान!
और हमारे रमेश भईया के भाईजान!
अब्दुल्ला मियाँ के जीजाजान!

हमारे नाच पर आखिरी दस की नोट लुटाने वाले कल्लू रिक्शे वाले को हम हौले -हौले दिल से...प्यारे -प्यारे दिल से....शुक्रिया अदा कर ऽऽऽऽ ते हैं।

वह कहते हुए अपने बदन को हिलाता और एक चुम्मा पब्लिक की तरफ़ उछाल कर परदे के पीछे जाने लगा....

भीड़ से कुछ मनचले चिल्लाए...अरे ऽऽऽऽ! लंबुआ लहंगा उठाउ सारे ऽऽऽऽ

अब तक बुत बने सिपाही फिर जागे...सुनो ऽऽऽऽ!

लड़के चिल्लाने लगे....लंबुआ ऽऽऽऽ

सिपाही पिनक कर पीछे चले गये..लंबुआ प्रगट हुआ...बड़े मियाँ ने हारमुनियम पर तान दिया...छोटे मियाँ ने तबले पर थाप लगाई और लंबुआ ने राग छेड़ा...

नज़र लागी राजा तोरे बंगले पे.....

महफ़िल अपनी पूरी रवानी पर थी। गाँव इब्राहिमपुर में रामलीला मण्डली के समापन के बाद कुछ विशेष नौटंकी की प्रस्तुति थी जिसे लड़कों ने बहुत मेहनत से उस्मान मास्टर के निर्देशन में तैयार किया था। लड़कों की नौटंकी में लंबुआ का नाच खासा बिघ्न डालता पर त्रुटि होने पर मंच संभालता भी वही, इसलिए लड़के दाँत पीस कर रह जाते।

इब्राहिमपुर हिन्दू- मुस्लिम साझी आबादी वाला गाँव है और हर साल चढ़ते कुआर यहाँ दोनों कौम मिलकर रामलीला खेलते और खूब जोश और उल्लास से दशहरा मनाते हैं। इस गाँव में एक संगीत प्रेमी परिवार पता नहीं कब से रहता चला आ रहा है जो रामलीला, नौटंकी, भजन, कीर्तन में साज बजाता।...मूलतः यह लोग शहीद बाबा की मजार पर हर बृहस्पतिवार को कौव्वाली गाते।

भारत के तमाम संघर्षरत किसानों-मजदूरों की व्यथा कथा यहाँ भी व्याप्त है। यह गाँव मूलतः बुनकरों की सघन आबादी वाला गाँव है जहाँ बिना किसी जातिगत बँटवारे के एक तिहाई घरों में करघों का नाद सौन्दर्य व्याप्त है। चम्पा की उलझी तानी सलमा सुलझा जाती है तो सलमा को सुंदर बेल-बूटे बनाना चंपा सिखा जाती है। यहाँ लड़कियों का झुण्ड एक साथ कन्या पाठशाला से लेकर स्कूल कॉलेज जाता रहा है। यहाँ सब कुछ सामान्य है....लड़के- लड़कियाँ एक दूसरे से प्रेम करते हैं, मोबाइल पर संदेश भेजते हैं, छोटी बहनों से प्रेमिकाओं को उपहार भेजते हैं और इस एवज में छोटी बहनें भाईयों को इमोशनल ब्लैकमेल कर, पैसे ऐंठ अपनी जरूरतें पूरी करती हैं। यह प्रेम अँखुवाता है, जवान होता है पर परवान नहीं चढ़ता, कारण बड़े बुजुर्ग हर हाल में मामला संभाल लेते हैं और इस तरह प्रेम के नाम पर मार -काट की घटना का यहाँ कोई इतिहास नहीं है। हाँ, एक बात जरूर है कि जब मेहरून्निसा का हण्डा आग पर चढ़ रंग उबालता है और इमरती देवी का कारवाँ गली से गुजरता है तो गाहे बगाहे झड़प हो ही जाती है। तब जरूर यह अटकने लगती हैं कि किसका बच्चा किसका है...जोलाहे का जनमा, नाउ का जनमा, चूड़ीहारे की पैदाइश का राज इस युद्ध में अक्सर सामने आता है और फिर बड़े बुजुर्ग हस्तक्षेप कर मामला हाथापाई तक बढ़ने से बचा लेते हैं। इन दोनों की दुश्मनी का कारण बस इतना है कि जिस दिन मेहरून्निसा घर से जेवर कपड़े समेट अपने प्रेमी प्रेमशंकर ऑटो वाले के संग भागने वाली थी, इमरती देवी ने हल्ला मचा सब गुड़गोबर कर दिया। छत से रस्सी के सहारे उतरते झाँसी की रानी रंगेहाथ पकड़ी गयीं...प्रेमी की जमकर कुटाई हुई और झटपट चचेरे भाई संग निकाह पढ़वा दिया गया।

इमरती देवी के चार बेटे और पाँच बेटियाँ... उनके ना जाने कितने, सो जब घर से निकलतीं तो साथ में बेटी, बहुओं, नाती -पोतों ,परपोतों का जुलूस साथ निकलता। मेहरून्निसा और इनकी अलग ही कहानी थी, इसे यहीं छोड़ते हैं।

हाँ तो नौटंकी का खेला चल रहा था...शीर्षक था शान्ति देश के राजा और शान्ति प्रिय प्रजा। मास्टर उस्मान इस गाँव के एक मात्र घोषित लेखक, पत्रकार, निर्देशक और न जाने क्या -क्या? जवानी में सिनेमा में काम करने के लिए बम्बई भागे और लुट- पीट कर लौट आए पर भूत नहीं उतरा। यहाँ पर नाटक मण्डली बनाई और कैफ़ी साहब की शरण में गये। उन दिनों आजमगढ़ के रंगप्रेमी युवा कैफ़ी साहब के शहर आते उनसे मिलने सरपट भागते। कैफ़ी साहब इप्टा के संचालक थे। उस्मान ने इप्टा ज्वाइन किया और नाटक, नौटंकी खेलने लगे। गाँव के आलसी और खलिहर लड़के इनके शागिर्द बनते...इस क्रिया की घोर प्रतिक्रिया होती और कुछ के अब्बू तो कुछ के पप्पा से जम के वाक् और कभी- कभी मल युद्ध भी हो जाता पर उस्मान मास्टर अपनी धुन के पक्के आदमी। उम्मीद नहीं छोड़ी और पिछले बीस सालों से नाटक खेलना अनवरत जारी है।

मास्टर उस्मान सामयिक मुद्दों को नौटंकी में बड़ी कारीगरी से उठाते और हँसते, रोते-हँसते-गाते जनता सार तक पहुँच जाती। मन्दिर- मस्जिद के गरम मुद्दे को भी बड़ी तार्किकता से उठाते, कभी मंहगाई तो कभी बेरोजगारी। इधर वह दुखी रहने लगे थे कि लेखकों विद्वानों की धरती आतंकगढ़ कहलाने लगी है। वह अपनी पूरी जमा पूंजी अपने नाटकों में झोंक रहे थे और युवकों को साहित्य, संगीत से जोड़ने के अथक प्रयास में लीन। घर वालों ने पैसा फूँक इस नौटंकी के आशिक को बेघर किया तो गाँव के बाहरी हिस्से में अपने खेत में पहले झोपड़ी डाल छत बनाया और मदरसे में नौकरी मिलते पक्का घर बना लिया...घर के बाहरी हिस्से में कैफ़ी आज़मी रंग मण्डल का कार्यालय खुला...बगल की कोठरी में पुस्तकालय। शाम को लड़कों को नौटंकी का प्रशिक्षण देते और दिन में उन्हीं के हवाले घर छोड़ मदरसे चले जाते। उनका घर सराय था...जिसे बाप के ताने मिलते वह इधर शरण लेता।

मास्टर ने शादी नहीं की....कारण वही, जिससे प्रेम किया वह हिन्दू थी और परिणति संभव न था सो अपने हाथों शादी की मुबारकबादी ग़ज़ल लिखी और गाकर आए महफिल में.....आजीवन कुँवारे रहे और प्रेमियों के जख़्म पर अपनी गजलों का मलहम लगाते रहे।

दुनिया इधर तेजी से बदल रही है.... लखनऊ से चली सिक्स लेंथ सड़क आज़मगढ़ की सरहद तोड़ गाँवों के बीच तो कभी कस्बों के बाज़ार ढहाती...खेत खलिहानों को रौंदती इनके गाँव इब्राहिमपुर को पूरे साल (सन् 2019) धूल और गर्द से भरे है। सबके फेफड़े गर्द से फूल रहे हैं पर खुश हैं कि विकास आया है....खेतों के दाम तेजी से बढ़ रहे हैं। शहर के व्यापारी बीघे के बीघे खेत खरीद बांउड्री उठवा रहे हैं। जिधर सड़क निकल रही है उधर के खेतों के दाम आसमान छू रहे हैं। उस्मान मास्टर को छोड़ सब खुश हैं कि अब उनका गाँव टाउन एरिया हो जाएगा। बाज़ार नजदीक होगा और लड़कों को दुकान धन्धे में लगाना आसान हो जाएगा। मास्टर सुनते तमतमा जाते....

मियाँ! जो खेत गये तो खाओगे क्या? मत भूलो की ये सड़क तुम्हें रोटी देने नहीं तुमसे रोटी छीनने आ रही है। मास्टर इधर जो बयार बही है उससे खासे नाराज हैं....आधी रात को उठ कर टहलने लगते

हैं.....बरगद के नीचे शहीद बाबा के मज़ार से जाकर बतियाने लगते हैं। इधर गाँव भर में शौचालय बन गये हैं पर घूमनी औरतें भी कम जिद्दी नहीं हैं। शुकउवा के उगते खेतों की ओर निकल जाती हैं...आए दिन मास्टर को मजार से बतियाते देख डरने लगी हैं। पूरे गाँव में हल्ला है कि मास्टर के सिर जरूर कोई जिन्नात बैठ गया है या घायल आशिक पगला रहा है। ये हालत है इस गाँव इब्राहिमपुर में उस्मान मास्टर की। इनकी कथा भी यहीं छोड़ती हूँ।

हाँ तो बात अधूरी रह गयी थी मेहरून्निसा की...मेहरून्निसा लंबे कद, सुडौल शरीर की पहाड़ जैसी औरत .....आप उसे औरत देह में तीन मर्द की ताकत रखने वाली औरत कह सकते हैं। खूब मेहनती...पूरे गाँव का सूती तकुए का धागा लच्छा बना रंगना इसी का काम है। पहले दूसरे गाँव से रंग कर धागा आता और कई बार तो हफ्तों धागा समय से न मिलने पर पूरे गाँव में काम ठप्प रहता। मन्दी के समय इस कारोबर पर बहुत बुरा असर पड़ा...लगभग हर घर में फांके कसी की नौबत आ गयी। उस समय मेहरून्निसा ही तारणहार बनी। लोन ले पावरलूम लगाया और धागा थोक में शौहर संग मिलकर उठाया। धागे को रंगने की विधि सीखी और हण्डा चढ़ा पूरे गाँव को मातम से बाहर निकाला। इन दिनों मियाँ बीबी इस गाँव के सबसे बड़े कारोबारी थे। व्यापार में भी मेहरून्निसा बड़े दिल की औरत है...जब तक बुनकर अपना माल बेच नहीं लेते तब तक पैसे का तकाजा नहीं करती, उल्टे मुसीबत में सौ पचास दे ही आती। ज़बान की तेज दिल की नेक मेहरून्निसा इस गाँव की धड़कनों में बसी गाँव को बसाए हुए थी। इन्हीं के शौहर रामलीले के आयोजक होते, लड़के पैसा घटते इनके दरवाजे धरना देते और मेहरून्निसा चिल्लम चिल्ली मचाते हजार पाँच सौ अधिक ही देती इस चेतावनी के बाद कि अब दुबारा मत आना तुम सब और लड़के हँसते हुए मेहरून्निसा ख़ाला को आदाब बजाते निकल लेते।

इब्राहिमपुर इस देश की साझी विरासत का खूबसूरत नमूना, एक साथ शहीद बाबा के मजार से लोहबान तो बगल में बैठे बरम बाबा के चौरे से अगरबत्ती की गन्ध उठती, मस्जिद से उठी अजान की आवाज से बच्चों की भोर होती तो मन्दिर की आरती आगाह करती कि सतबजहिया पैसेंजर का समय हो गया है। बड़े मियाँ पंडी जी के दुवार पर भरूका में खुशी -खुशी चाय पी चले आते और जो कोई कहता कि यह भेदभाव है, डपटकर बताते कि वह मांसाहारी हैं और पंडित सुच्चा शाकाहारी। यहाँ बड़े-बड़े भड़काने वाले आए और मुँह बाए चले गये लेकिन गाँव की एकता बनी रही।

इक्कीसवीं सदी के आरम्भ से नयी पीढ़ी ने कुछ और बदलाव जोड़े...अब बच्चे खान-पान में परहेज को ढोंग कह एक दूसरे के घर खाने -पीने लगे थे। इस बदलाव पर भी नाहक कोई विवाद नहीं था, बड़े बुजुर्ग बच्चों के इस बदलते रूख को जितना मन माने स्वीकार रहे थे। कितना तो सुन्दर था यह गाँव कि एक दिन जैसे पूर्ण सूर्य ग्रहण लग गया हो...मुस्लिम आबादी एकदम से मुसलमान हो गयी..बाबरी मस्जिद का फैसला आया और उस फैसले के कुछ ही दिन बाद नागरिक संशोधन बिल।

उस्मान मास्टर रात भर लिखते पन्ने फाड़ते कागजों के ढेर को देख फफ़ककर रोते हैं कि अब कौन सी नौटंकी लिखें कि उनका गाँव बचे, गाँव के लोग बचें और बची रहे उनके बीच की साझी संस्कृति। उस्मान के रोने से अब किसी को फर्क नहीं पड़ता...यह गाँव जो करघे के नाद-सौन्दर्य पर आँख खोलता था अब घर-घर राम और अल्लाह की चीख में बदल रहा था।

इन दिनों उस्मान अलसुबह डफली ले घर से निकल कर पागलों की तरह गली-गली गाते फिरतें हैं....

चल उड़ जा रे पंछी की अब ये देश हुआ बेगानाऽऽऽऽ

(**परिचय :** लेखिका चर्चित कवयित्री, कहानीकार एवं गाथांतर पत्रिका की संपादक हैं। वर्तमान में आजमगढ़, उ. प्र. में अध्यापन कार्य में संलग्न हैं।) **नोट-** यह कथांश लेखिका के उपन्यास का अंश है, अगले अंक में भी जारी रहेगा।